रविवार, दिनाँक **30-07-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दे चाह दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार मुहब्बतां लांवदा ए, दासी दा दिल घबरांवदा ए।

इन्हां विच न मैं मुहब्बत लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए संसार दे विच फसांवदे नी, आपे आपे ही प्रीतां पए लांवदे नी।

इन्हां कोलों बली निर्लेप राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार समुन्द्र डरांवदा ए, भैणां नूं तरना न आंवदा ए।

रघुनाथ जी दे मन्दिरां विच मैं जावां, संसार दे विच न फस जावां।।

सानू नाम दा जादू पा दे बली, रघुनाथ जी दे घर पहुंचा दे बली।

चित्त रघुनाथ जी दे चरणां दे विच लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

महाबीर जी रस्ता बताया ए, रघुनाथ जी दे चरणीं बिठाया ए।

दिन रात मैं सेवा दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए मन किसे पासे न जावे, हरदम सांवले चरणां दे विच राहवे।

रघुनाथ महाबीर जी दा दीदार पावां, संसार दे विच न फस जावां।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दर्शन देंदे रहणा बलधार जी ए।

कई सूरजां दा सूरज मै देखदी राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

सजनों यह जो भजन अभी आपने सुना उस भजन के अन्तर्गत सच्चेपातशाह जी परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे ईश्वर ! मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों पर हर क्षण स्थिर बनी रहूँ क्योंकि इसके अतिरिक्त संसार में समरस निर्लिप्त रहने का अन्य कोई रास्ता नहीं है। जब हमारे पास अन्य कोई रास्ता ही नहीं तो हर सुरत के लिए बनता है कि वह अपना सम्बन्ध भगत शिरोमणि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के संग जोड़े और उनके द्वारा बताई युक्ति का अनुशीलन कर अपने स्वरूप को पा ले। फिर वहीं से आत्मिक ज्ञान व सब कुछ प्राप्त करे। आगे सजनों इस भजन के अन्तर्गत वह बताते हैं कि यह संसार तरह-तरह के छलावे से मुझ सुरत को अपने में उलझाने व फँसाने का प्रयास करता है। अतः हे महाबीर जी ! मुझे इतनी शक्ति दो कि 'इन्हां विच न मै मोहब्बत लावां' अर्थात ये संसारी यदि मुझे प्यार करें, तो भी इनके साथ मेरा ख़्याल न जुड़े। इस तरह मै सबके प्रति अपना फ़र्ज निष्काम भाव से हँसकर अदा करते हुए अपने आत्म-स्वरूप में जुड़ी रहूँ। सजनों यह सबसे उत्तम इच्छा है और उत्कृष्टता का प्रतीक बनने की यानि श्रेष्ठ बनने की और मानवता में स्थिरता से बने रहने की बात है।

इस तथ्य के दृष्टिगत हमें याद रखना है कि भक्ति-भाव अपनाकर ऐसा सुनिश्चित करने के अतिरिक्त हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं है। इस सन्दर्भ में चाहे हम कितने ही प्रकारों के भक्ति-भाव क्यों न अपना लें लेकिन ऐसा किये बगैर सफलता नहीं प्राप्त कर सकते। अतः सजनों इस अत्यन्त ही सहज व सरल तरीके को अपनाओ और ख़्याल/ध्यान को संसार की तरफ से मोड़कर अपने स्वरूप की तरफ जोड़ दो। जोड़कर अपने इस यथार्थ को कि 'मैं शरीर नहीं, अजर-अमर आत्मा हूँ' पहचानते जाओ और यह ठान लो कि मुझे किसी भी भयवश संसारी/शारीरिक अवगुण नहीं अपनाने। यहाँ जान लो कि जब भी किसी इन्सान के अन्दर यह भाव कि 'मैं अमर आत्मा हूँ' और मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, मज़बूत हो जाता है तो वह इन्सान कदापि किसी के भी छल-कपट में आकर या फिर दुनियावी

कामनायुक्त प्यार में बहकर कमज़ोर नहीं पड़ता। जानो कि कामयुक्त प्यार इन्सान को कमज़ोर बना देता है और उसकी मानसिकता को तोड़ देता है। ऐसा होने पर बुद्धि गिरावट में आ जाती है क्योंकि तब विवेकशक्ति क्षीण हो जाती है। परिणामतः हम सत्य/झूठ की पहचान करने में असमर्थ हो जाते हैं। अब संसारी तो बात को उस तरह से बखान करने में चतुर होते हैं जिस तरह से उनकी बातें स्वीकारी जाएँ। इस तरह बौद्धिक तौर पर अपनी चतुराई का वर्णन कर वे आपको अपने वश में कर लेते हैं। यहाँ जान लो कि जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर प्राप्त होने वाले वचनों को सुनने के बावज़ूद ऐसे चतुर मतलबी इन्सानों की यारी स्वीकार लेता है और उनके पीछे चलना शुरु कर देता है, उससे बढ़कर मूर्ख और कोई नहीं होता। यदि ध्यान से देखो तो यही मूर्खता हमें पल-पल खा रही है। इसी हेतु सच्चेपातशाह जी परमेश्वर से कहते हैं कि हे ईश्वर ! मेरे साथ ऐसा न हो यानि मेरा ख़्याल व ध्यान जो बिन सूरजों प्रकाश है वहाँ जुड़ा रहे और सत्य मेरे हृदय में सदा प्रकाशित रहे। बस फिर जो भी उस सृष्टिकर्त्ता का हुक्म हो उसका पालन करना ही मेरा कर्त्तव्य हो। अतैव हे ईश्वर ! अगर मैं ऐसा करने में समर्थ रहूँ तो मुझे आपकी चरण-शरण प्राप्त हो। चरण-शरण प्राप्त है तो समझो कि हर पल ईश्वर का दर्शन मेरे सम्मुख है। फिर आडम्बरयुक्त भक्ति-भाव का जो विस्तार है उसकी कोई आवश्यकता नहीं रहती यानि वह सब व्यर्थ है क्योंकि यह सब तो नाशवान है और ख़्याल का मुख मोड़ने के लिए है, जोड़ने के लिए नहीं। सो इस हितकर बात को सजनों गहराई से समझो और आत्म-सुधार कर परमपद पाने में समर्थ हो जाओ। ठीक है जी?

'हाँ जी'।

यह सजनों सबने करना है। इस हेतु सर्वप्रथम अपना आत्म-निरीक्षण करना है और परस्पर एकता में रहते हुए आगे बढ़ना है। फिर चाहे कोई कितनी ही आवाज़ें क्यों न लगाता रहे, चाहे वह दूर का सम्बन्धी हो या निकट का, दोस्त हो या कोई अन्य हो लेकिन आपने जो 'आत्मा में परमात्मा' है, उसी अटल सम्बन्ध को याद रखना है। बाकी तो सब विछोड़ा यानि वियोग है, सोच है, रोना-झुखना है व

भटकाव है। सजनों आपने इस वियोग में नहीं फँसना अपितु एकता में रहकर आगे बढ़ना है। अब आज से कलुकाल के कीर्तन बोलने आरम्भ करने हैं और साथ ही इन्हें ध्यान से सुनना व समझना है। इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से सुनोः-

श्री साजन जी सब सजनों को समझौता दे रहे हैं

(सच्चे पातशाह जी के मुख के शब्द)

दोस्ती छड के ते कलुकालड़े दी, राम नाम नाल करलो प्यार सजनों।

राम नाम ही संग चलना जे, दोस्ती उसे दे नाल हुण लावो सजनों।।

कलुकाल दा पहरेवा बदल के ते, सतवस्तु नाल प्रेम बढ़ावो सजनों।

जैंदी प्रेम नाल प्रीत है उन्हां ताईं, उस यार नाल यारियां लावो सजनों।।

राजे महाराजे कम्ब के ते, कम्बे ऋषि मुनि कुल जहान सजनों।

कोई विरला ओ न कम्बिया जे, जेहड़े निष्काम रस्ते ते चढ़ जान सजनों।

कलुकालड़े दा संग छोड़ के ते, अपना आप लवो पछाण सजनों।

सतचित आनन्द स्वरूप आप दा, हुण इस नू लवो पछाण सजनों।।

पहले विशूचिका हुण सूचिका होय के ते, जन्म सफल ओ लग्गी ने बनान सजनों।

तुसां भुले हो इन्सान कई जन्मां दे, विचो विच न रगड़े जाओ सजनों।।

पंज ज्ञान इन्द्रियां, पंज कर्म इन्द्रियां जित के ते, मन जितियां जग जितिया जान सजनों।

जित लिया उस कुल जहान सारा, उन्हां दा दुनियां ते हो गया नाम सजनों।।

बाज़ी जित के ते जग सारड़े दी, जित लिया उस कुल ब्रह्माण्ड सजनों।

ओथे तीर तलवार दी लोड़ नाहीं, जिस शक्ति लई पछान सजनों।।

महाबीर जी दे वचनां ते चल के ते, अपना आप लवो पछान सजनों।

आप अमर इन्सान ओ अमर होवे, जेहड़ा वचन करे प्रवान सजनों।।

सजनों अब सबने कीर्तन बोलने के प्रति उत्साहित होना है। जो चाहे इस सन्दर्भ में अपना नाम लिखवा सकता है। इसमें बड़े-छोटे का कोई सवाल नहीं क्योंकि यह साल सतयुग की संस्कृति को जन-जन तक पहुँचाने के निमित्त है। सो इसमें सब अपना सहयोग दे सकते हैं। अब जानो कि जो कीर्तन अभी हमने बोला, इसमें कलुकाल के साथ दोस्ती छोड़ने का सन्देश दिया गया है। यहाँ जानो कि कलुकाल का स्वरूप कलुषित है। अतः आपने कलुषित विचार, कलुषित भाव-स्वभाव धारण नहीं करने। इस सन्दर्भ में हम मानते हैं कि चाहे पति-पत्नी हो या परिवारजन, पड़ोसी हो या समाज, चारों तरफ कलुषित वातावरण फैला हुआ है। हमने उस वातावरण को नहीं धारणा। यह कोई छोटा नहीं अपितु बहुत बड़ा पराक्रम दिखाने की बात है। इस हेतु जो नाम-युक्ति आपको प्राप्त हुई है, उसका मज़बूत मानसिकता से युक्ति-संगत वर्त-वर्ताव करना है और आत्म-सुधार करना है। आत्म-सुधार करने से पहले आत्म-निरीक्षण करने की आवश्यकता होती है। अतः आपको देखना है कि आपका अन्तर्मन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे कलुषित स्वभावों से कितना कलुषित हो चुका है। अगर कलुषिता का स्तर प्रतीत हो तो समझ लेना कि आप बुरी तरह से इन भाव-स्वभावों से प्रभावित हो इन्सानियत से गिर दानवता को प्राप्त हो चुके हो। अब इस दानवता से उबरने हेतु राम नाम का सहारा लेने के अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प नहीं है। अतः राम नाम से प्यार करो क्योंकि यह परमार्थी प्रेम-प्यार ताकतवर है, निर्मल है, अनोखा है और प्रसन्नता का प्रतीक है। साथ ही यह स्वतन्त्र बुद्धि बनाने वाला है। इसके विपरीत कलुकाल का कामनायुक्त प्रेम अपने में फंसाने वाला है यानि बन्धनमान

करने वाला है। ऐसे भूले-भटके मानव को विसूचिका यानि शारीरिक-मानसिक रोग हर तरफ से परेशान करते हैं और तीनों तापों से त्रस्त कर लाईलाज बना देते हैं। इन तापों से बचना चाहते हो तो राम नाम से प्यार करो। जानो अगर ऐसा कर लिया तो आप अपने अमर स्वरूप को पाकर अमरता के प्रतीक बन जाओगे। इस तरह विसूचिका आपकी सजन बन जाएगी और रोग समाप्त होने पर तीनों तापों से मुक्ति मिल जाएगी। यहाँ हम आप सब सजनों से पूछते हैं कि क्या आप सर्वरुपेण स्वस्थ नहीं होना चाहते? क्या तीनों तापों से ग्रस्त रहना चाहते हो? क्या रोगग्रस्त बने रहने का स्वाद पड़ गया है? क्योंकर हम रोगी रहकर अन्यों को भी रोगी बना रहे हैं? क्या यह अपने व सबके प्रति सजनता है या फिर वैर-भाव है? जानो वैर-भाव का आरम्भ यहीं से होता है। उसके बाद ही यह दूसरों के प्रति बढ़ता है और हमें मानवता के विपरीत अज्ञानमय अवस्था अनुरूप ढाल देता है। जानो यह मानवता के बिल्कुल विपरीत है। इस परिस्थिति से उबारने हेतु ही शास्त्र कह रहा है कि निष्काम हो जाओ यानि जो भी सोचो, बोलो या करो, वह निष्कामता का प्रतीक हो। बताओ क्या हिम्मत है स्वयं में ऐसा बदलाव लाने की?

'हाँ जी'।

तो फिर दिन-रात अपने ख़्याल पर पहरा दो और स्वाभाविक परिवर्तन लाकर इन्सानियत में आकर सजनता के प्रतीक बन जाओ। हम पूछते हैं कि क्या रोगों में ग्रस्त होकर बहुत मज़ा आ रहा है? अगर मज़ा आ रहा है तो फिर जीवन में क्यों रोते-चिल्लाते हो? क्यों होश में नहीं आते? यह कैसी विडम्बना है? यह तो निज-धर्म खुद ही हारने की बात है। ऐसा न हो इस हेतु निष्कामता अपनाओ। जितनी निष्कामता अपनाओगे उतने ही गुणी बनते जाओगे और जितने कामी बनोगे उतने ही काम-ग्रस्त हो जाओगे। सो अगर आत्म-गुणी बनना है तो सुदृढ़ता से निष्काम-भाव अपनाओ और इस शुभ कार्य में किंचित मात्र भी देरी मत करो। हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ और एकता में आ जाओ। जानो यह कार्य वही सिद्ध कर सकेगा जो सच्चेपातशाह जी के वचनानुसार सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचन दिल से प्रवान करेगा यानि उन वचनों को एक कान से

सुनकर दूसरे कान से नहीं निकालेगा अपितु उन वचनों को हृदयगत करके आत्म-सुधार कर लेगा। इस तरह वह अपने जन्म की बाज़ी जीत लेगा। तो क्या यह कोई मुश्किल काम है?

'नहीं जी'।

तो फिर यह काम कर लेना और इसके विषय में अपने संगी-साथियों व अन्य सबको बताना। जानो जितना अन्यों को यह बात बताओगे, उतना ही आपके अन्दर शक्ति का वर्द्धन होगा और इस तरह आप अपनी वास्तविक शक्ति को पहचान जाओगे। जब तक आप मानव रूप में अपनी शक्ति को नहीं पहचानते, तब तक संसार पर विजय पाना मुश्किल है। अतः सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे पर आने के नाते जीवन बनाने का जो सुनहरी अवसर आपको इस जन्म में प्राप्त हुआ है, उसका पूरा लाभ उठाओ और अपना जीवन सँवार लो। यदि चाहते हो कि ऐसा ही हो तो समय व्यर्थ गँवाना छोड़ दो। इसके स्थान पर होश में आओ और अपने सजन बन जाओ। अब आगे सुनो-

(श्री साजन जी हनुमान जी को कह रहे हैं)

ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा, नारद जी रहे ने बता, स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

तेरे बगैर कलयुग नू कौन हटावे।

तू है पातशांहवा दा शाह, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

कलुकाल ने हुन आन घबराया, भारत माता जी तुहानु बुलाया।

अंधेरे दा चानणा तू आ, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

प्रह्लाद दी ख़ातर नरसिंह अवतार तैं धारिया हरनाकश्यप हरनाकश नू मार पछाड़िया।

भक्त प्रह्लाद नू लिया ने छुड़ा, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

त्रेता युग विच अवतार तैं धारिया, राम रूप विच रावण नू मारिया।

रावण नू कीता ने तबाह, सीता माता नू लिया ने छुड़ा।।

द्वापर युग विच अवतार तैं धारिया, कृष्ण रूप विच कंस नू मारिया।

दुर्योधन दा कीता ने फनाह, ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।।

कलुकाल विच तेरी है वारी, चाणना आवो श्री साजन सुखकारी।

अपना बाग तू आप लिशका, बुद्धि सब दी तू स्वच्छ बना।।

ए स्वामिन कलयुग नू आप हटा।

ध्वनिः- सिंहासन है हुन आपदा।।

ओथे जोत जगे ओ जगमग-जगमग।

हर वस्तु विच ओ जापदा।।

इस सन्दर्भ में ध्यान-कक्ष की कलासें भी लग रही हैं। उन क्लासों के माध्यम से आपको तरतीब से पढ़ाई करने का मौका मिल रहा है। सो इस मौके का लाभ उठाओ और इन कक्षाओं में जो भी आप पढ़ते-समझते हो, उसे अपने भाव-स्वभाव द्वारा व्यवहार में ले आओ। साथ ही इस वाणी को जन-जन तक भी पहुँचाओ। जानो निश्चित रूप से ऐसा करने से सफलता अवश्य मिलेगी अतः पुरुषार्थ दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ और जन्म की बाज़ी जीत जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।